B.Ed 2nd year
Date 1 May 2020
Saturday

Teaching of Hindi

लिखित भाषा शिक्षण

'जब भाषा को लिपि के माध्यम से व्यक्त किया जाता है, तो इसे 'लिखित भाषा' कहते हैं। लिखने की दृष्टि से 'लिपि का ज्ञान' होना पहली आवश्यकता दूसरे स्तर पर 'शब्द ज्ञान' तीसरे स्तर पर 'वाक्य रचना' का ज्ञान होना।

लिपि के प्रमुख तत्व

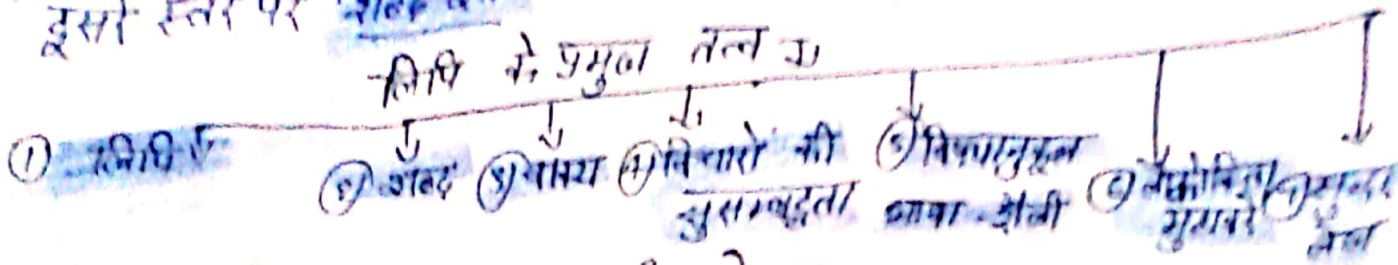

(1) लिपि
(2) शब्द
(3) वाक्य
(4) विचारों की सुसम्बद्धता
(5) विषयानुकूल भाषा-शैली
(6) लोकोक्तियाँ मुहावरे
(7) सुन्दर लेख

लिखित भाषा के उद्देश्य

(1) ज्ञानात्मक उद्देश्य
⇒ छात्रों को लिपि, शब्द, सूक्ति, लोकोक्ति व मुहावरों का ज्ञान।
⇒ छात्रों को मानव जीवन से परिचित कराना।
⇒ पठित अंश का विश्लेषण कर केन्द्रीय भाव को समझाना।

(2) कौशलात्मक उद्देश्य
⇒ समस्त वाक्य रचना करने में निपुण करना।
⇒ विषयानुकूल भाषा-शैली का प्रयोग करना।
⇒ मौन पठन करने में निपुण करना।
⇒ केन्द्रीय भाव की योग्यता को समझने का विकास।

(3) भावात्मक उद्देश्य
⇒ छात्रों में साहित्य अध्ययन एवं स्वाध्याय के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
⇒ समाज देश, जाति व धर्म के प्रति संवेदनशील बनाना।
⇒ सृजनात्मक शक्तियों का विकास करना।
⇒ मौलिक रचना करने की ओर प्रवृत्त करना।

लिखने-पढ़ने की अवस्था प्रारम्भ → 3 वर्ष

प्राथमिक स्तर पर —
(1) अक्षर प्रणाली।
(2) स्वरोच्चारण प्रणाली।
(3) देखो कहो प्रणाली।
(4) अनुकरण प्रणाली।
(5) साहचर्य प्रणाली।
(6) वाक्य शिक्षण प्रणाली।
(7) कहानी।

Scanned with CamScanner

मुख्य प्रणालियाँ :-

1. अनुकरण प्रणाली।
2. पेस्तालॉजी की रचनात्मक प्रणाली
3. मान्टेसरी प्रणाली
4. जेकाटोट प्रणाली
5. अनुलेख
6. प्रतिलेख
7. श्रुतलेख
8. रिक्त स्थानों की पूर्ति

प्राथमिक स्तर पर पढ़ने-लिखने की शिक्षा

हस्तलेख -
1. लेखन सामग्री।
2. बैठने का आसन।
3. लेखनी पकड़ने का ढंग
4. लिखते समय अक्षरों में सुडौलता, समानुपात
5. अन्य उपाय - सुन्दर लेखों की प्रदर्शनी।

लिखित कार्य का महत्व व उपयोगिता :-

⇒ स्पर्धा की भावना।
⇒ सुलेख प्रतियोगिता।
⇒ प्रतिलेखन के अधिक से अधिक अवसर।
⇒ अनुलेख, प्रतिलेख, श्रुतलेख।
⇒ रचना।
⇒ प्रश्नोत्तर।
⇒ मौलिक रचना।

B.R.C. Deoband
ARP Bro → Sapna Tyagi

Scanned with CamScanner